सुकेत के बरठूना गांव का घौड़ स्थल: जहां बाघ देव गण की भूमिका में है

पश्चिमी हिमालय के केन्द्र में अवस्थित सुकेत महाभारत व रामायण काल से अपनी सांस्कृतिक व धार्मिक विरासत के अनुशीलन के लिये विख्यात रहा है। सुकेत उत्तरी भाग व्यास और दक्षिणी भाग सतलुज नदी घाटी के मध्य में स्थित है जहां पीरपंजालिक पर्वत श्रृंखला की शिकारी पर्वतमाला नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करती है। सुकेत में सतलुज घाटी क्षेत्र के अंतर्गत तत्तापानी क्षेत्र का विशेष धार्मिक महत्व है। यहां त्रेतायुग के आरम्भिक चरण में ऋषि जमदग्नि ने आश्रम बनाकर आर्य संस्कृति का हिमालयी क्षेत्र में विस्तार किया था। ऋषि के पुत्र परम श्रेष्ठ ब्रह्मणत्व व क्षत्रित्व के संयुक्त तेज से विभूषित परशुराम ने मातृहत्या के पाप के प्रक्षालनार्थ सुकेत के सतलुज घाटी क्षेत्र पंज्याणु-छण्डियारा, पांगणा, काओ (कचनपुरी), ममेल (मायापुरी) में वैदिक ब्रह्मणों को बसाकर आर्यसंस्कृति का प्रसार किया।

सतलुज घाटी के इसी क्षेत्र पांगणा में वीरसेन ने सुकेत राज्य को स्थानीय शासक ठाकुर व राणाओं को पराजित कर स्थापित किया। सुकेत की आदि राजधानी पांगणा में महाभारत काल में पाण्डव ने माता कुन्ती सहित यहां विहार किया और इस घटना के बाद यह भूभाग पाण्डवांगण अर्थात् पाण्डवों का आंगन से कालांतर में भाष विपर्य से पांगणा नाम से सुविख्यात हुआ।1

सेन वंशज राजाओं की कुलदेवी महामाया राजराजराजेश्वरी पांगणा की पुण्यस्थली पांगणा भगवान शिव की रमणस्थली भी है और यहां शिव अम्बरनाथ नाम से पूजित हैं। आरम्भ में नागर शैली का यह शिव मंदिर अलंकृत भद्रमुख, जीवंत प्रस्तर मूर्तियों और एकाश्म नदीकेश्वर प्रस्तर विग्रह के लिये सुविख्यात है। महाभारतकालीन सुकुट राज्य का पाण्डवांगन (पांगणा) गांव की शिवालय, लक्ष्मी-नारायण मंदिर व देहरी नामक स्थान पर महिषासुन मर्दिनी देवी की स्वयंभू प्रतिष्ठा के अतिरिक्त यहां के धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन में रक्सेटा, मशाणु, डुण्डला, तोगड़ा, योगिनियों, नवाका, हीरामौता, नागिनी, नाग आदि अनार्य देवों की विद्यमानता क्षेत्र को प्राक-वैदिक व वैदिक संस्कृतियों के संगमस्थल के रूप में ख्याति प्राप्त है।

पांगणा क्षेत्र के समीपस्थ कुटवाची में महासु देव, छण्डियारा में महामाया पांगना की बहिन बालेश्वरी देवी, फ़ास में महर्षि वशिष्ठ, चुरग में नाग सुनानी, बेलरधार में महीदेव, बखारी में नाग शिरोमणि माहूंनाग, तलैण में बड़ेयोगी देव, सरही में गीहनाग आदि शैव, शाक्त, नाग व ऋषि कुल के देव प्रतिष्ठित हैं। सुकेत की आदि राजधानी पांगणा गांव पांगणा सरिता के किनारे अवस्थित है। पांगणा सरिता पीरपंजालिक पर्वत श्रृंखला की पर्वत शाखा शिकारी देवी की रम्यस्थली शिकारी देवी पर्वत-स्कन्ध से उद्भूत होती हुई अपने दोनों ओर अनेकानेक सुरम्य और प्राक-ऐतिहासिक व ऐतिहासिक स्थलों को का स्पर्श कर पश्चिमाभिमुख प्रवाहित होकर अपने गंतव्य की ओर प्रवाहित होती है। पांगणा सरिता की जलराशि और इस सरिता के दोनों ओर अनेक प्राक-वैदिक व वैदिक देवी-देवताओं और आसुरी शक्तियों का प्रवास और प्रतिष्ठा है, जो सुकेत के सृष्टि आरम्भ से सांस्कृतिक व सामाजिक विकास के परिचायक हैं। पांगणा सरिता के आरम्भिक प्रस्थानस्थल के बायीं ओर उतुंग पर्वत-स्कंध पर महासु देव का पावनस्थल शिवदेहरा है, जो मण्डी व सुकेत रियासतों के मध्य रियासती काल में विभाजक की भूमिका निभाता रहा है। सरिता के उद्गमस्थल शिकारी में देवी अपनी सहचरणियां चौंसठ योगिनियों के सानिध्य में पर्वतीय क्षेत्र का रक्षण करतीं हैं। यहीं अज्ञातवास काल में पाण्डवों को देवी ने निज स्वरूप दिखाकर विजयश्री का आशीष प्रदान किया था। पांगणा सरिता के किनारे कुटवाची में देव महासु प्रतिष्ठित हैं, जो सतलुज घाटी में शैव परम्परा के विशिष्ट स्तम्भ है।

बिठरी गांव में प्राचीन काल से महादेव धर्म के संरक्षक और सात्विक समाज के निर्धारक के आधार स्तम्भ हैं। पश्चिमवर्ती पांगणा सरिता की जलराशि में पांगणा व बिठरी के मध्य बेताल कुण्ड, पांगणा में यक्षिणी कुण्ड प्राक्वैदिक अलौकिक शक्तियों के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

छण्डियारा के समीप सरिता उत्तराभिमुख होकर अलौकिक भौगोलिक घटना की चरितार्थ करती है। फलतः यहां उत्तरवाहिनी का मोक्षप्रद धाम की स्थापना स्वर्गारोहण के सोपानों के निर्माण कर पाण्डवों द्वारा की गई। पाण्डवों द्वारा स्वर्ग सोपान कृ पुण्यस्थल उत्तरवाहिनी से पांगणा सरिता पश्चिमाभिमुख होकर सतलुज के समीप सरैर में वैदिक नदी सतलुज में विलीन होकर सांस्कृतिक इतिहास की परिचायक बनकर पुज्य सरिता रूप में प्रतिष्ठित होती है। पांगणा सरिता व सतलुज के संगम स्थल पर सरैर नामक स्थान पर पाण्डवों द्वारा शिव के गुफा मंदिर का निर्माण व स्थापना की गई।

प्राकृतिक इस शिवगुफा को पांगणा-सतलुज नदी घाटी को प्राकृतिक सौंदर्य और धर्म-संस्कृति की गंगोत्री कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी।1 पांगणा नदी घाटी में चुरग के पश्चिमोत्तर में लगभग चार किमी की दूरी पर ब्रह्मर्षि वशिष्ठ मानव कल्याण और धर्म-संस्कृति की पृथ्वी पर स्थापना के लिये देव थला रूप में प्रतिष्ठित हैं।

ऋषि वशिष्ठ ऋग्वैदिक ऋषि हैं और आर्यों के शिवालिक-हिमालयी क्षेत्र में आगमन के समय वे अग्रगण्य ऋषियों में एक रहे हैं। ऋग्वैदिक आर्य आरम्भिक अवस्था में शिवालिकीय क्षेत्र में बस्तियां बनाकर रहने लगे।

वशिष्ठ वंश में अनेक वशिष्ठ हुए है जिनमें देवराज वशिष्ठ,वशिष्ठ आपव, वशिष्ठ अथर्वनिधि,वशिष्ठ श्रेष्ठभाज, वशिष्ठ मैत्रावरूण, वशिष्ठ शक्ति, वशिष्ठ सुवर्चस् और वशिष्ठ (वशिष्ठ जो अयोध्या के राजा मुचकुन्द के समकालीन थे) तथा वशिष्ठ जो धर्म शास्त्राकार के रूप में जाने जाते हैं, आदि प्रसिद्ध हैं। इनमें वशिष्ठ आपव का आश्रम हिमालय में बताया जाता है।2

जिस वशिष्ठ ऋषि का वर्णन गोपथ ब्राह्मण में किया गया है, वह वशिष्ठ मैत्रावरूणि थे जिनका आश्रम विपाशा नदी के किनारे वशिष्ठ शिला नामक स्थान पर है। यही वशिष्ठ उत्तरी पांचाल के ऋग्वैदिकालीन राजा पैजवन सुदास के पुरोहित तथा शक्ति के पिता थे। वशिष्ठ ऋषि से पूर्व आर्य राजा सुदास के पुरोहित विश्वामित्र थे जिसे किसी कारणवश पुरोहित पद से हाथ धोना पड़ा और उनका गरिमापूर्ण स्थान वशिष्ठ ने ले लिया। परिणामस्वरूप विश्वामित्र वशिष्ठ के शत्रुपक्ष में सम्मिलित हो गये। अतः दाशराज्ञ युद्ध में विश्वामित्र ने सुदास के शत्रुओं का साथ दिया। यह भी कहा जाता है कि विश्वामित्र पुनः सुदास के पुरोहित बने,परन्तु वशिष्ठ ने उन्हे पदच्युत कर दिया। तैतरीय संहिता (7/4/7/1) के अनुसार विश्वामित्र द्वारा वशिष्ठ पुत्र शक्ति की हत्या का षड्यंत्र सेवकों के माध्यम से बनाया गया था। विश्वामित्र का वशिष्ठ के साथ वैमनस्य का कारण नंदिनी गाय भी मानी जाती है जिसे प्राप्त करने के लिये उन्होने असफल प्रयास किया। क्षात्र बल पर ब्रह्मबल के प्रबल होने पर विश्वामित्र ने राजपाट त्याग कर ब्रह्मर्षि बनने की प्रतीक्षा ली।3

ब्रह्मर्षि वशिष्ठ तत्वज्ञानी थे और रामायण के अनुसार वे इक्ष्वाकु वंश के पुरोहित और गुरू थे। राम की शिक्षा-दीक्षा,राजतिलक व अश्वमेध यज्ञ का संचालन वशिष्ठ ऋषि ने किया।4

सुकेत के चुरग के समीप फ़ास बहल नामक स्थान पर ऋषि वशिष्ठ लोक कल्याण के निमित देव थड़ा रूप में विराजित हैं। यहां देव थला का पाण्डव (शरणगृह) शैली में मंदिर निर्मित है। मंदिर नाशाधारी व कुरण्डधारी है। गर्भगृह में ऋषि वशिष्ठ लिंग रूप में प्रतिष्ठित हैं। सांसारिक भोगकामनाओं की पूर्ति के अनुसार वे और श्रीब्रह्मा जी की गोद से उत्पन्न हुए। वे व्यास देव के प्रपितामह थे।5

राणा व ठाकुरों की पश्चिमी हिमालय में प्राचीन काल से क्षेत्रपति की भूमिका रही है। हिमाचल में रियासतों की स्थापना से पूर्व राणा व ठाकुर यहां के शासक थे और एक सीमित क्षेत्र के अधिपति थे। राणा शब्द संस्कृत शब्द राजन से निसृत माना जाता है। इसी तरह ठाकुर भी राजनक या राजन से ही निसृत है। ये दोनों शासक क्षत्रिय रहे हैं जो आपसी वैमनस्य से संघर्ष की नीति के अनुसरण करने के कारण अपनी सीमाओं का विस्तार करने की चेष्टा में लगे रहे।6

सुकेत के फ़ास बहल में वशिष्ठ ऋषि के प्राकट्य के विषय में क्षेत्रीय इतिहासकार धूरन्ड ने अपनी काव्यात्मक ऐतिहासिक पुस्तक भारभाषणी में बड़ा मार्मिक वर्णन किया गया है। यह घटना उस काल की है जब इस हिमालयी क्षेत्र में पूर्ववर्ती आर्य मवानों का राज्य था। मवाना खश जाति के लोग थे जो भारत के एक विस्तृत क्षेत्र में फैल गये।7 इन्ही मवाना की दो ठकुराईयां चुरग व समीपस्थ कोट में थीं। चुरग में शिशुआ ठाकुर कोट के न्यायप्रिय सहजो ठाकुर की लोकप्रियता व उन्नति से ईर्ष्या करता था। यही ईर्ष्या दोनों के बीच कलह का कारण बनी-

इहण वीहण कोट कटाए,
सहजे ठाकरे मणे मवाए।
रहन्दे बहन्दे घरे सराए,
धरजा परजा लाणो बड़ाए।
धीरजो वीरजो दुमे वजीरा,
रैत वलैत सिमरो सिरा।
रसदे-वसते खटो कमाओ,
खड़िया छपिया चैनी डाओ।
सहजो ठाकरे चार टकोए,
पांजकी देओ वांके समोये....क्रमशः

चुरग के शिशुआ ठाकुर ने सहजो ठाकुर के प्रति दुराग्रह को फलितार्थ उसके दो पुत्रों को बुलाकर विष देकर कर मरवा डाला। शिशुआ ठाकुर की इस अमानुषिक कृकृत्य का प्रतिशोध लेने के लिये जब सहजो ठाकुर के शेष बचे दो पुत्र चुरग गये, उन्हे भी शिशुआ ठाकुर ने मार डाला।ईर्ष्या से जनित इस लड़ाई में एक बार शिशुआ ठाकुर सहजो ठाकुर की लड़की को बलात् उठाकर ले गया और एक कन्दरा में उसके शील से खिलवाड़ करने पर उतारू हो गया। कन्या ने अपनी रक्षा के लिये अपने देवी-देवताओं का आह्वान किया। संयोगवश कन्या के समक्ष रथार्ढ देव थला एक युवक के रूप में प्रकट हुए और संकट के भंवर में फंसी कन्या को रक्षा का आश्वासन दिया। शिशुआ,सेनापति और उसके सैनिकों को वह युवक एक उल्लू के रूप में उस कन्दरा में दिखाई दिया। उल्लू को देखना अपशकुन समझकर शिशुआ व उसके सैनिक उसे मारने के लिये उद्यत हुए। उल्लू कन्दरा से निकलकर एक आग के विशाल गोले में परिणत हो गया और हवा में तैरता हुआ शिशुआ ठाकुर के महल चिराग पर



रुका। आग के गोले से शिशुआ ठाकुर का महल आग की लपटों से घिर गया। यह भयावह दृश्य देखकर शिशुआ सैनिकों सहित अपने महल को बचाने के लिये चुरग की ओर भागे।8

इस प्रकार ऋषि वशिष्ठ द्वारा रचित यह घटनाक्रम कोट क्षेत्र में अपने लोकहित कार्य की चेष्टा को व्यावहारिक रूप देने के लिये घटित हुआ।आततायी व बर्बर चुरग के शिशुआ ठाकुर का शासन ऋषि कृपा से नष्ट हो गया और कोट के ठाकुर सहजो की इकलौती उत्तराधिकारी राजकुमारी ऋषि कृपा से अपने शील को बचाने के योग्य हो पायी। ऋषि वशिष्ठ फ़ास बहल में सघन देवदार वन में भेखल झाड़ी के समीप यज्ञकुण्ड स्थापित कर तपश्चर्या करने लगे। फ़ास बहल का यह स्थान घने वन से आच्छादित प्रकृति की निःस्तब्धता के कारण तपश्चर्या के लिये उपयुक्त था। यहां से पांगणा नदी घाटी का अप्रतिम दृश्य एक दृष्टि से निहार जा सकता है।

एक बार ऋषि चच्चोट क्षेत्र के अंतर्गत कुमरार में विराजित कमरूनाग से मिलने सरही गांव होते जा रहे थे। सरही में उन्हे वहां के नाग शिरोमणि गीहनाग मिले और ऋषि से यात्रा का प्रयोजन पूछा। सरही नाग ने कहा कि आगे मार्ग में दुर्जेय मशाण नामक दुरात्मा है जो तुम्हे आगे नहीं बढ़ने देगा। अतः ऋषि ने वापस लौटने का निर्णय किया और पांगणा सरिता को पार कर मशोण गांव के समीप जाकर एक स्थान पर विश्राम किया। तदनंतर वे चलते हुए कोठो गांव में ठाकुर के खेत में मक्की के ढेर के अंदर बैठ गये। जब ठाकुर ने देखा कि मक्की का ढेर गिरने लगा है तो उसने उत्सुकतावश पास जाकर देखा कि उसमें तेजोमय मुखमण्डल युक्त ऋषि बैठे हैं। ऋषि ने कहा कि तुम मुझे आगे कोट गांव तक छोड़ दो। ठाकुर ने कोट गांव तक ऋषि की यात्रा में साथ दिया। उन्होने ठाकुर से कहा, ÷मैं यहां देव रूप में प्रतिष्ठित हूंगा और तुम मेरी तीसरी शाक (आवाज) हो। अर्थात् जब मुझे तुम्हारी सेवा की आवश्यता होगी तो तुम्हे तीसरी आवाज दी जायेगी। तुम धरौणा खानदान के नाम से प्रसिद्ध होंगे। चूंकि तुम मेरा धड़ हो और इतने घनिष्ठ होने के कारण तुम्हे मेरे कार्यों में मौहता का दायित्व प्राप्त होगा। अतः देव की यहां स्थापना होने में कारण बने कोठो गांव के ठाकुर धरौणा कहलाये। वास्तव में कोठो के ठाकुर जम्मू से आये हैं और भारद्वाज गोत्र से सम्बन्ध रखते हैं। जम्मू से सम्बन्ध रखने के कारण जम्वाल कहलाते हैं।

देव थड़ा के कोट के समीप फ़ास में प्रतिष्ठा में माध्यम बने कोठो के ठाकुर ठाकुराई काल में वजीर के पद पर आसीन थे। देव थड़ा की देव व्यवस्था के पदानुक्रम में देवता द्वारा दूसरी आवाज (हाक) कराडड़ गांव के ठाकुरों को लगाई जाती है। कराडड़ गांव से सम्बन्ध रखने के कारण इन्हे कराडड़ कहा जाता है। कराडड़ ठाकुर वास्तव में सहजो ठाकुर के वंशज हैं और वे भी देवता के मौहता (प्रधान प्रबंधक) की श्रेणी में है। देव थड़ा की देव व्यवस्था में तीसरी आवाज झरण्डी गांव के ठाकुरों को पड़ती है। ये ठाकुर झरण्डी गांव में बसे होने के कारण झराण्ड कहलाते हैं। देव थड़ा के चौथे मौहता परिवार सीणी गांव के ठाकुर हैं जिन्हे देववाणी में सनाड़ कहा जाता है।

बरठूना में बाघ की वनस्थली घौड़ः पांगणा सरिता के दायीं ओर बरठूना में कोठो के ठाकुरों के आगमन व देव थड़ा द्वारा समीपस्थ चौड़ में अपने बाघ को रक्षा के लिये स्थापित करने के पीछे रोचक घटना है। बरठूना के निवासी व धराड़ खानदान के दिवान चंद जम्वाल के अनुसार प्राचीन काल में जब हम कोट गांव के समीप कोठो गांव में बसे थे,उस समय आषाढ़ मास में कोट गांव में देव थड़ा के सम्मान में मेले का आयोजन हो रहा था। मेले के समापन के बाद परम्परानुसार कोठो गांव के ठाकुर देवता को जातर में घर ले गये। स्थानीय परम्परानुसार कोठो में ठाकुर की ग्रामवधू ने देवता के अभिनंदन में जौमड़ (अखरोट) का वर्षण देवरथ पर किया। संयोग से अखरोट के आघात से देवता के मुख्य मोहरे (शीरा मोहरा) पर गहरा निशान पड़ गया। चूंकि जातर में उस समय धूप का प्रखर ताप होने से सोने के मोहरे (मुखौटा) मृदुल होने के कारण अखरोट के गिरने से दबाव (खिम्बी) आ गया। देवता के साथ चल रहे जरगण्डी के ठाकुरों ने कहा कि कोठो (धराड़) के ठाकुरों द्वारा अखरोट के आघात से देवता के मुख्य धात्विक विग्रह को क्षति पहुंची है। इस घटना पर विवाद इतना उग्र हो गया कि कोठो के ठाकुर कुटुम्ब ने कांधे पर उठाए देवता के रथ को को जोर से खड़ (खलिहान) में छोड़ा। जिससे रथ टूट गया और देवता के मोहरों को कील (किलटे) में मंदिर वापस लाना पड़ा।

देवता को अपने घर जातर पर मिले अपमान से कोठो के ठाकुरों का अप्राकृतिक रूप से क्षय होने लगा। वास्तव में देव परम्परा में देवकोप भयंकर व दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ने वाला होता है। देववाणी में देवी या देवता अपनी प्रजा द्वारा परम्परा के उल्लंघन और उपेक्षा भाव से आवेशित होकर कुल क्षय और कुमति का श्राप देते हुए ठाकुर के ठाकुरों के मवेशी व बाघ के परिवार आस-पास विचरण करते हुए प्रायः देखा जा सकता है। देव थड़ा के गण बाघ के बरठूना में रंधण का यह जीवंत उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि किस प्रकार सुकेत व हिमालयी देव परम्परा में देवशक्ति हिंसक जानवरों में अपनी ऊर्जा का स्फुरण कर उन्हे लोक कल्याण में प्रतिनियुक्त करते हैं।

दिवान चन्द जम्वाल के अनुसार कभी देव का विछ (बाघ) भयंकर गर्जना अपने निवास स्थल घौड़ से करता है जिससे लोगों के दिल दहल जाते हैं। बाघ की यह गर्जना इस बात की चेतावनी होती है कि बरठूना के धराड़ कुटुम्ब के द्वारा देव थड़ा के साथ कर्तव्य वहन में भूल या विस्मण हो गया है। ऐसी स्थिति में ठाकुर कुटुम्ब तुरन्त देव के शरणागत होकर देवकोप का कारण देव के प्रतिनिधि से पूछते हैं। देव थला ने बरठूना के धराड़ परिवार को अपने क्षेत्र कोट ठकुराई के अंतर्गत उनके पुराने गांव कोठो में जमीन का अंश रखकर जोड़े रखा है। अतः इस परिवार की भूमि आज भी अपने पूर्ववर्ती गांव कोठो में स्थामित्व सहित रखी गई है। ताकि देवता की भूमि से परिवार की जड़ें जुड़ी रहे।

दिवान चन्द जम्वाल के अनुसार ऋषि देव थला के अपने मुख्य धात्विक विग्रह (शीरा मोहरा) पर धराड़ परिवार द्वारा जो अखरोट के आघात से विकृति आई थी,उसे देव यथावत ही रखे हुए है ताकि अतीत में इस परिवार से जुड़ा घटनाक्रम स्मृति जीवित रहे और इतिहास व परम्परा का हिस्सा बना रहे।

देव थड़ा ने कोट के विभिन्न गांवों के चीर ठाकुरों के साथ सम्बन्धों और देव-दावित्वों को पूर्व में घटित घटनाक्रम के अनुसार सुनिश्चित किये हैं। देव थड़ा के मंदिर प्रशासन व देव परम्परा के निर्वहन के लिये चार मौहता ठाकुर परिवार सेवारत हैं। जब देव थला सहजो ठाकुर की कन्या को चुरग के नृशंस शिशुआ ठाकुर के चंगुल से बचाने के बाद फ़ास बहल नामक स्थान पर सघन देवदार की वन वाटिका के समीप भेखल झाड़ी के समीप यज्ञकुण्ड बनाकर रहने लगे,तो उनके तेजोमय स्वरूप व तपोबल से क्षेत्र में ख्याति प्राप्त होने पर उनकी देव रूप में पूजा होने लगी। श्रद्धानवत प्रजा की इहलौकिक पीड़ा व संताप का ऋषि की कृपा से शमन होने लगा और क्षेत्र में समृद्धि का आवर्तन होने लगा। देव शक्ति से लोगों की आस्था व समर्पण उत्तरोत्तर बढ़ने से देवता के पास धन और आभूषण का संग्रह होने लगा।

कराडड़ मौहता- शिशुआ ठाकुर के वंशज कराडड़ मौहते ने थोड़ा सा सोना देवता के भण्डार से अपने प्रयोगार्थ रख लिया। देवता ने ठाकुर को दण्डस्वरूप कोढ़ रोग से ग्रसित कर लिया। ठाकुर ने देवता से कहा,÷ हे देव! कोढ़ होने से हम अछूत हो गये हैं। अतः हम बाहर से आपकी पूजा करेंगे।÷ देवता ने कराडड़ ठाकुर से कहा,÷ हे कराडड़ ठाकुर! मैं धर्मी देव हूं और मैं तुम्हे स्मरण करता हूं। मैं तुम्हें यह अधिकार देता हूं कि मेरा विग्रह जब कभी मंदिर से बाहर लोकदर्शन के लिये निकलेगा तो तुम्हारी गोद में आकर रथ पर श्रृंगारित होगा।÷ अतः कराडड़ ठाकुर को देव थला के धात्विक विग्रह को मंदिर से गोद (कमरबंध) में निकालने का अधिकार प्राप्त हुआ।

झराण्डू मौहताः- झराण्डी गांव के ठाकुर झराण्डू मौहते ने देवता की पीतल की पूजा की थाली में बरियुण्डे (खोबड़े) खाए जिस कारण थाली अपवित्र हो गई। देवता ने झराण्डू को इस भूल के लिये कोड़ग्रस्त कर लिया। झराण्डू ने देवता से प्रार्थना की,÷ देव! हम कोढ़ होने से अछूत हो गये है।अतः हम मंदिर के बाहर से ही आपकी पूजा करेंगे।÷ देवता ने झराण्डू ठाकुर से कहा,÷ हे ठाकुर! मैं धर्म का पक्षधर हूं। तुम मेरे अंतरंग हो और तुम्हे स्मरण करते हुए मैं तुम्हे अपनी पहली आवाज (हाक) का अधिकार देता हूं।÷ आज देव थड़ा मंदिर से यात्रा या किसी देवोत्सव के प्रयोजन से बाहर निकलते हैं तो देवता की ओर से पहली आवाज झराण्डी के झराण्डू ठाकुर (मौहता)

को पड़ती है। इस प्रकार देव थड़ा की मंदिर प्रशासन व परम्पराओं की स्थापना पूर्व में घटित किसी घटना के परिणाम और देवता के अंतिम निर्णय का प्रतिफल है। वशिष्ठ ऋषि थड़ा देव के चौथे मौहते सीणी गांव के सनाड़ी हैं जो अन्य तीन मौहतों-धराड़,कराडड़ व झराण्डु की तरह शीर्ष देव व्यवस्था से जुड़े हैं। एक बार देव थड़ा का गूर चुरग के खील कुफरी के समीप शणोटी नाग के मंदिर शणोट गांव किसी देवान्हाल में गया था। जब गूर को आवेश आया तो सीणी गांव के व्यक्ति ने गूर की गज में नाग शणोटी के गण झुण्डला मशाणु को स्थापित किया और गज को गूर से छीन कर अलाव में फैंक दिया। गूर द्वारा मजबूती से गज को पकड़े जाने पर गज में लगी घण्टियां हाथ में रह गई। इस घटना के बाद देव थड़ा ने सीणी के ठाकुरों को मौहते के पद पर आसीन कर अपनी सेवाओं में नियुक्त किया।11

अतः लोक कल्याण और सांसारिक भोग्य कर्मों में सम्मिलित होने के लिये ऋषि वशिष्ठ ने पश्चिमी हिमालय में अवस्थित सतलुज घाटी के इस क्षेत्र में अपने को क्षेत्रपति के रूप में प्रतिष्ठित किया। ऋषि वशिष्ठ के सुकेत क्षेत्र में स्वयम् को प्रतिष्ठित करने से यह सहज ही प्रमाणित होता है कि आर्यों के राजाओं ने हिमालय के इस क्षेत्र में न केवल राजनीतिक आधिपत्य स्थापित किया बल्कि अपने गुरूओं के माध्यम से यहां वैदिक संस्कृति व धर्म की जड़ों को सुदृढ़ किया। कोट ठकुराई के फ़ास बहल में ऋषि वशिष्ठ की देव रूप में प्रतिष्ठा से सुकेत (सुकूट) राज्य में धर्म,न्याय,संस्कार व संस्कृति का विस्तार हुआ।

देव थला का क्षेत्र सुकेत की राजधानी पांगणा तक फैला हुआ है। पांगणा गांव के मध्य में प्राचीन अम्बरनाथ मंदिर के ठीक सामने देवता का चबूतरा (थड़ा) है जहां बैठकर देव रियासती काल से न्याय करते आये हैं। देव थड़ा का पांगणा गाव में यह चबूतरा इस बात का प्रमाण है कि यहां अम्बरनाथ मंदिर की स्थापना में ऋषि शिरोमणि वशिष्ठ के सदप्रयास अवश्य रहे होंगे। चूंकि ऋग्वैदिक काल के आरम्भिक चरण में जब आर्य संस्कृति का हिमालयी क्षेत्र में आगमन हुआ, उसका श्रेय वैदिक ऋषि-वशिष्ठ, अगस्त्य, जमदग्नि आदि को जाता है जिन्होने प्रारम्भिक काल में शिवालिकीय क्षेत्र और कालांतर में पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में आश्रम बनाकर वैदिक धर्म व संस्कृति की आधारशिला रखी। सुकेत की आदि राजधानी पांगणा के पश्चिम में अवस्थित बरठूना गांव में ऋषि वशिष्ठ रूप देव थला के गण (बाण) बाघ का सखा सदृश व्यवहार देव शक्ति के सामर्थ्य और चमत्कार का प्रतीक है। देव थड़ा बाघों के अधिपति और संक्रमित शीतला रोग के निवारक माने जाते हैं।

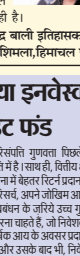

वास्तव में पश्चिमी हिमालय की देव संस्कृति सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का अविच्छिन्न अंग बन कर युगों से सृष्टि की संवेदनशील प्रवृत्ति से आवेष्टित रही है।

-डॉ. हिमेन्द्र बाली इतिहासकार व साहित्यकार शिमला,हिमाचल प्रदेश

एनएफओ खुलने की तारीख-25 नवंबर 2026; बंद होने की तारीख-7 दिसंबर 2026

इनवेस्को म्यूचुअल फंड ने लॉन्च किया इनवेस्को इंडिया फाइनेंशियल सर्विसेज़ डेट फंड

मुंबई,ः इनवेस्को म्यूचुअल फंड ने आज इनवेस्को इंडिया फाइनेंशियल सर्विसेज़ डेट फंड लॉन्च करने की घोषणा की। यह खुले विकल्पों वाली (ओपन-एंडेड) डेट स्कीम है जो वित्तीय सेवा क्षेत्र में निवेश करेगी। इसमें सीमित स्तर पर ब्याज दर जोखिम और सीमित क्रेडिट जोखिम शामिल होगा।

आज के दौर में भारत के कॉर्पोरेट बॉन्ड बाज़ार में, वित्तीय क्षेत्र के बॉन्ड की हिस्सेदारी लगभग 50% है, जिनसे निवेशकों को विविधीकृत और विस्तारशील अवसर हासिल होता है। (स्रोत- सेबी, 30 सितंबर 2026 तक का आंकड़ा)। साथ ही, बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के ऋण संबंधी वित्तीय मानदंडों (क्रेडिट मेट्रिक्स) में सुधार और वित्तीय क्षेत्र के बॉन्ड से मिलने वाले आकर्षक रिटर्न (कैरी ऑपर्च्युनिटी) के मद्देनज़र किसी एक क्षेत्र पर केंद्रित डेट निवेश रणनीति के लिए अनुकूल माहौल बना है।

यह लॉन्च ऐसे समय में हुआ है जब भारत के वित्तीय खंड में मज़बूती नज़र आ रही है। इसे बेहतर परिसंपत्ति गुणवत्ता, मज़बूत कैपिटल बफर और उच्च गुणवत्ता वाले जारीकर्ताओं (इशुअर) की बढ़ती संख्या का समर्थन मिल रहा है। यह स्कीम बैंक, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी), आवास वित्त कंपनियों और सार्वजनिक वित्तीय संस्थानों में उपलब्ध निवेश अवसरों का लाभ उठाने का प्रयास करेगी। इसके लिए यह मुख्य रूप से वित्तीय सेवा क्षेत्र की संस्थाओं द्वारा जारी एएए+ और उससे अधिक रेटिंग वाले कॉरपोरेट बॉन्ड तथा ए1+ रेटिंग वाले धन बाज़ार से जुड़े विभिन्न किस्म इंस्ट्रूमेंट में निवेश करेगी।

इस स्कीम का प्रबंधन विकास गर्ग और गौरव जाखोटिया करेंगे। इसका बेंचमार्क निफ्टी फाइनेंशियल सर्विसेज़ शॉर्ट टर्म डेट इंडेक्स होगा। इनवेस्को म्यूचुअल फंड के सुनिश्चित आय (फिक्स्ड इनकम) प्रमुख और फंड प्रबंधक, विकास गर्ग ने इस स्कीम के लॉन्च के अवसर पर कहा-हमारा मानना है कि मौजूदा बाज़ार का माहौल वित्तीय सेवा डेट खंड में आकर्षक अवसर पेश करता है। इस खंड में क्रेडिट की गुणवत्ता हाल के वर्षों में बेहतरीन स्तर पर है, और एनबीएफसी की परिसंपत्ति गुणवत्ता पिछले एक दशक में सबसे अच्छी स्थिति में है। साथ ही, वित्तीय क्षेत्र के बॉन्ड अन्य विकल्पों की तुलना में बेहतर रिटर्न प्रदान करते हैं। हम अपने गहन क्रेडिट रिसर्च, अपने जोखिम आकलन और सक्रिय पोर्टफोलियो प्रबंधन के ज़रिये उच्च गुणवत्ता वाला पोर्टफोलियो तैयार करना चाहते हैं, जो निवेशकों को जोखिम के हिसाब से आकर्षक आय के अवसर प्रदान कर सके। एनएफओ के दौरान और उसके बाद भी, निवेश की न्यूनतम राशि ?1,000 रहेगी, और इसके आगे यह ?1 के गुणक में हो सकती है। एसआईपी निवेश के लिए, इस स्कीम के तहत मासिक/न्यूनतम 1,000) और त्रैमासिक (न्यूनतम 2,000) विकल्प उपलब्ध है, और इसके बाद 1 के गुणक में निवेश किया जा सकता है। निवेशकों से कोई निकासी शुल्क नहीं लिया जाएगा।

न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) आज (25 नवंबर, 2026) से सभिदान के लिए खुल गया है और यह 7 दिसंबर, 2026 को बंद हो जाएगा।